इमाम अली (अलै.)

वसीए मुस्तफा का मोमिनो ताबूत जाता है
हर एक पीरो जबाँ इस ग़म में सर पर ख़ाक उड़ाता है

यतीमाने अली रोते हैं जो सर पीट के पैहम
तो हर आँसू का क़तरा अरश को जुमबिश में लाता है

चले हैं लेके ताबूते पदर शब्बीर और शब्बर
जनाबे ज़ैनबो कुलसूम को ग़श-पा-ग़श आता है

है एक शोरे क़यामत कूचओ बाजार में बरपा
नजफ़ की सिमत कूफ़े से जनाज़ा शह का आता है

इधर हसनैन ताबूते पदर पर सर्फ़े गिरियाँ हैं
तलातुम है उधर दजले का पानी जोश खाता है

मकीने खानेए माबूत उठा है आज दुनिया से
ये सन्नाटा हमें कूफे की मसजिद का बताता है

है एक सकते का आलम आज तक एक-एक ज़र्रे पर
दरो-दीवारे कूफे से ग़मे शह उमड़ा आता है

नजफ जाने की ऐ 'फिक्र' हसरत तो बहुत लेकिन
ज़ियारत हो मयस्सर देखिए वह दिन कब आता है